



मल्लिका आम का उत्पादन

तरुण अदक*, नरेश बाबू* और पी. एल सरोज*

मल्लिका आम, बेहद खास आम है। आम की यह किस्म खाने में बहुत ही स्वादिष्ट और पोषक तत्वों से भरपूर होती है। वैज्ञानिक विधि द्वारा इसके उत्पादन से 250 से 800 ग्राम तक के फल लिए जा सकते हैं। बाजार में भरपूर मात्रा में न मिलने के कारण इसकी मांग हमेशा बनी रहती है। किसानों को इस आम की खेती करने से 100 से 200 रुपये प्रति कि.ग्रा. दाम मिल सकता है। आत्मनिर्भरता के लिए मल्लिका आम का उत्पादन बढ़ाना चाहिए, जिससे बाजार में आम पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों तथा उचित दाम भी मिलता रहे। इस आम के गुणवत्तायुक्त पौधे, रोपण करने के लिए भाकृअनुप-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ की पौधशाला से मिल जाते हैं। इनकी कीमत लगभग 100 रुपये प्रति पौधा है। बरसात के समय मल्लिका आम के पौधे का रोपण हो जाना चाहिए जिससे कि बागों में नमी बनी रहे और पौधे को पर्याप्त मात्रा में पानी मिलता रहे। पौधे जब धीरे-धीरे बड़े होने लगे तब कटाई-छंटाई करके पेड़ों की कैनोपी को उचित आकार दिया जा सकता है।

भारत में आम की विभिन्न प्रकार की किस्मों की खेती होती है। वैसे तो इसकी खेती भारत के दक्षिणी राज्यों कर्नाटक एवं तमिलनाडु में होती है लेकिन अपने अनूठे स्वाद एवं गुणवत्तायुक्त फलों की वजह से इसकी खेती उत्तरी भारत में भी होने लगी है। मल्लिका किस्म को दशहरी एवं नीलम किस्म के संकरण से तैयार किया गया है। इसके फलों का आकार बड़ा तथा रंग पीला होता है। इसके फलों में अधिक मात्रा में गूदा पाया जाता है तथा फलों को अधिक समय तक भण्डारित किया जा सकता है। आम की इस किस्म को अब व्यावसायिक रूप से उगाया जाने लगा है।

*भाकृअनुप-केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, डाकघर-काकोरी, लखनऊ, उ.प्र.

गुणवत्तायुक्त मल्लिका आम का उत्पादन करने के लिए उचित पोषण प्रबंधन का होना बेहद आवश्यक है। वर्षा ऋतु में पेड़ों के तने के चारों तरफ 1000 ग्राम नाइट्रोजन (2.17 कि.ग्रा. यूरिया), 500 ग्राम फॉस्फोरस (3.12 कि. ग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट) एवं 1000 ग्राम पोटेशियम (1.67 कि. ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटेश) उर्वरकों का प्रयोग करें।

वैज्ञानिक विश्लेषण में पाया गया है कि बागों की मृदा में पोषक तत्वों की कमी पायी जाती है। इन विशेष तत्वों में जिंक, पोटेशियम और बोरॉन की कमी मिलती है। जिन बागों में कॉपर और मैंगनीज की कमी हो वहाँ 150 ग्राम कॉपर सल्फेट और 150 ग्राम मैंगनीज सल्फेट का प्रयोग करना चाहिए। इस किस्म के बागों में लगभग 50

कि.ग्रा. प्रति पौधा अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद भी थालों में प्रयोग करें। उर्वरकों को प्रयोग करने से पूर्व थालों में उगे हुए खरपतवारों को हटाकर पेड़ के चारों तरफ नाली बनायें और उसी में उर्वरकों का प्रयोग कर मिट्टी द्वारा नाली बंद कर दें।

मृदा में नमी की पर्याप्त मात्रा न होने पर सिंचाई करें। नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटेशियम की अनुशंसित मात्रा के साथ 200 ग्राम बोरेक्स प्रति पेड़ डालने से 4 टन प्रति हैक्टर से अधिक उपज मिल सकती है। इसके साथ ही 1700 ग्राम बोरॉन मेटासोलेट छिड़काव करने से 5 टन से अधिक उपज मिलती है। यदि 850 ग्राम बोरॉन मेटासोलेट के साथ 1838 ग्राम जिंक मेटासोलेट का छिड़काव किया जाए तो 5.5 टन से अधिक उपज प्राप्त होगी। मृदा एवं पत्तियों के

फल मक्खी का नियंत्रण

जब फल परिपक्व हो जाते हैं तो फल मक्खी का प्रकोप बढ़ जाता है। इससे फलों को बहुत हानि होती है। मल्लिका आम के बागों में फल मक्खी का नियंत्रण रखने के लिए मिथाइल इथीलीन यौन गंध ट्रैप का प्रयोग 10 ट्रैप प्रति हैक्टर की दर से किया जाना चाहिए। मार्च-अप्रैल के महीने में इसे आम के पेड़ों में इस ट्रैप को लगा देना चाहिए ताकि फल मक्खी नियंत्रित हो सकें। फल मक्खी की अधिकता (5 मक्खी प्रति ट्रैप) हो तो साप्ताहिक अंतराल पर पेड़ के तने पर 100 ग्राम गुड़ (राब) को 1 लीटर पानी में घोलकर उसमें 2.8 ई.सी. का 2 मि.ली. डेल्टामेथ्रिन मिलाकर तने पर छिड़काव करें। आम के निर्यात को प्रभावित करने वाला यह एक प्रमुख कीट है। इसका प्रबंधन अनिवार्य है। गर्मी के समय मल्लिका आम के पेड़ों में 20 से 30 लीटर पानी प्रति पेड़ एक सप्ताह के बाद देना चाहिए ताकि बागों में नमी बनी रहे। पानी डालने से फलों में वृद्धि होती है तथा बलुई मिट्टी में फल का गिरना एवं फटना भी रोका जा सकता है। इसी प्रकार अप्रैल-जून महीने में उचित मात्रा में पानी डालने से पानी की भी बचत होती है तथा उपज में भी वृद्धि होती है।



मल्लिका आम के पेड़ों पर फल मक्खी ट्रैप

विश्लेषण के आधार पर यह पाया गया है कि सामान्यतः उत्तर प्रदेश राज्य की मृदा में जिंक और बोरॉन की कमी है। इनकी कमी की पूर्ति हेतु 200 ग्राम जिंक सल्फेट प्रति पेड़ अक्टूबर माह तक देना चाहिए। बाग की मिट्टी में 200-250 ग्राम जिंक सल्फेट का प्रयोग फल उत्पादकों को करने की सलाह दी गई। मल्लिका आम के मार्बल अवस्था में फल आने पर एक प्रतिशत जिंक सल्फेट और 0.5 प्रतिशत म्यूरेट ऑफ पोटाश का छिड़काव करना चाहिए पहला छिड़काव करने के 20 से 25 दिनों के बाद दूसरा छिड़काव करना चाहिए। फलों के विकास के चरणों में भी 0.5 प्रतिशत बोरेक्स का छिड़काव करना चाहिए। बागों में जैविक कार्बन की कमी

होने के कारण पर्याप्त मात्रा में वर्मीकम्पोस्ट, कुक्कुट खाद पेड़ के बेसिन की मिट्टी में डालनी चाहिए। इस किस्म में फलों के फटने की समस्या के निवारण हेतु बोरॉन का छिड़काव करने के साथ बाग में उचित नमी बनाए रखना आवश्यक है।

मल्लिका आम में गलन नामक रोग लग जाता है। इसके निवारण के लिए तुड़ाई से एक महीना पहले कैल्शियम क्लोराइड हाइड्राइड का 2 प्रतिशत घोल बनाकर 10 दिनों के अन्तराल पर तीन बार छिड़काव करें। इस किस्म के फलों की थैलाबन्दी करके भी अच्छा गुणवत्तायुक्त उत्पादन लिया जा सकता है। आम के नए बाग लगाने हैं तो ग्राफ्टेड फलों के पौधों को किसी विश्वविद्यालय

अथवा संस्थान की पौधशाला से खरीदें तथा 1×1×1 मी. आकार के गड्ढे में इनका रोपण करें। बागों को सूखने न दें तथा बीच-बीच में सिंचाई करते रहें। मल्लिका आम के गूदा के वैज्ञानिक विश्लेषण में पाया गया है कि 140 से 178 मि.ग्रा. प्रति कि.ग्रा. फॉस्फोरस 0.26 से 0.34 मि.ग्रा. पोटेसियम, 0.93 से 1.73 जस्ता, 1.10 से 2.33 मि.ग्रा. कॉपर, 1.50 से 1.83 मैंगनीज, 15.5 से 20.9 मि.ग्रा. आयरन तथा 2.6 से 4.0 मि.ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बोरॉन मिलता है। इस आम में टी एस एस 18.3 से 22.5° ब्रिक्स एवं 11.9 से 34.8 मि.ग्रा. प्रति 100 ग्राम एस्कार्बिक एसिड पाये जाते हैं। इसके फलों में 1.29 से 8.3 मि. ग्राम प्रति 100 ग्राम कैरोनोटीयड्स तथा 15.1 से 19.2 प्रतिशत कुल मिठास पाई जाती है। इसके गूदे की भी बहुत मांग रहती है। परिपक्व आम से गूदा निकालकर संरक्षण करना चाहिए। गूदे से विभिन्न प्रकार के आम के प्रसंस्करित उत्पाद बनाए जा सकते हैं।

इस किस्म की लोकप्रियता बढ़ रही है। बागवानों ने धीरे-धीरे महसूस किया कि मल्लिका आम स्वाद, रूप और खाने के गुणों के मामले में एक उत्कृष्ट किस्म है। इसके वृक्षों का फैलाव भी अपेक्षाकृत कम होता है। इसमें नियमित फलन भी होता है। अतः कह सकते हैं कि आधुनिक तकनीकों से मल्लिका किस्म का गुणवत्तायुक्त उत्पादन और विभिन्न प्रकार के मूल्य संवर्धित उत्पादों को तैयार कर किसान अपने बागों से अधिक मुनाफा लेकर आत्मनिर्भर बन सकते हैं। ■



मल्लिका आम के बाग में पुष्पण